बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है।

सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार हैं। हम उसी से मदद व माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर।

व बअद।

इर्शाद बारी तआला है ''बेशक आसमानों व ज़मीन की पैदाइश में, रात व दिन के एक दूसरे के पीछे आने जाने में, कष्तियों व जहाज़ो में जो दरिया में लोगों के फ़ायदे के लिए चलते हैं, बारिश में जिसे अल्लाह आसमान से बरसाता है फिर उससे ज़मीन को मरने (ख़ुश्क होने) के बाद ज़िन्दा (हरा–भरा) कर देता है, ज़मीन पर हर तरह के जानवर फैलाने में, हवाओं की गर्दिश में और बादलों में जो ज़मीन व आसमान के बीच धिरे रहते हैं, अक्लमन्दों के लिए निशानियां हैं।'' **(बक़रह–आयत–164)** मतलब यह कि कायनात का सारा निज़ाम अल्लाह अकेले के इख़्तियार में है। जो शख़्स अक्ल से काम ले कर निज़ामें कायनात पर ग़ौर करे वह अल्लाह की तौहीद को आसानी से समझ सकता है और जो सोच–समझ कर अल्लाह पर ईमान लाएगा, वह सब से ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह ही से करेगा। क्योंकि मुहब्बत उसी से होती है जो मुश्किल में काम आए, ख़तरों व हादसों में, हिफ़ाज़त करे, नुक्सानात से बचाए, ज़रूरतों को पूरा करे और उसका ख़्याल व मुहब्बत रूह व दिल को सुकून दे। यह सारी ख़ूबियां उसकी अपनी हों और हमेशा रहने वाली हों। यक़ीनन वह हस्ती सिर्फ़ अल्लाह है। इसलिए ''ईमान वाले सबसे ज्यादा मुहब्बत अल्लाह से करते हैं।'' **(बक़रह–165)** चूंकि मुहम्मद सल्ल. अल्लाह को बहुत मेहबूब हैं। इसलिए मोमिन अल्लाह के बाद उसके रसूल मुहम्मद सल्ल. से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करते हैं। वह इसलिए भी कि अल्लाह ने फ़रमाया ''कह दो! अगर तुम्हारे बाप, बेटे, भाई, बीवियां, ख़ानदान के लोग माल जो तुम कमाते हो, तिजारत जिसके बन्द होने से डरते हो और मकानात जिन्हें तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह की और उसके रसूल (सल्ल.) की राह में जद्दो जहद करने से ज़्यादा प्यारे हों तो इन्तेज़ार करो। यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म (यानि अज़ाब) भेजे। अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता।'' **(तौबा–24)** और आप सल्ल. ने फ़रमाया ''उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, तुममें से कोई शख्स उस वक़्त तक मोमिन (ईमान वाला) नहीं हो सकता। जब तक मैं उसके नज़दीक उसके वालिद और औलाद से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊँ।'' **(बुख़ारी–)** और यह भी कि ''कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक उसके घर वालों, माल और सब लोगों से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊँ।'' **(मुस्लिम –)** एक शख़्स आप सल्ल. की ख़िदमत

में हाज़िर हुआ और सवाल किया कि क़यामत कब आएगी? आप सल्ल. ने फ़रमाया "तुमने क़यामत के लिए क्या तैयारी कर रखी हैं?" उसने अर्ज़ किया–अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. की मुहब्बत। आप सल्ल. ने फ़रमाया "बेषक! तुम उसके साथ हो, जिससे तुमने मुहब्बत की।" अनस रज़ि. कहते हैं हमें इस्लाम लाने के बाद किसी बात से इतनी ज़्यादा खुशी नहीं हुई, जितनी आप सल्ल. के इस इर्शाद से हुई।

"मैं अल्लाह तआला, उसके रसूल सल्ल. अबु बकर रज़ि. और उमर रजि. से मुहब्बत करता हूं और मुझे उम्मीद है कि मैं आखिरत में इन्हीं के साथ रहूंगा। अगर चे मैंने उनके जितने आमाल नहीं किये।" (बुख़ारी – , मुस्लिम –)

मुहब्बते रसूल सल्ल. का तक़ाज़ा:–

अल्लाह के रसूल सल्ल. से मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि आप सल्ल. के हुक्यों को माना जाए, उनकी तामील की जाए और जिन बातों (कामों) से आप सल्ल. ने मना किया है, उनसे रूका जाए क्योंकि "आप अपने दिल से कोई बात नहीं कहते बल्कि वह बात कहते हैं जो आप की तरफ़ वहय की जाती हैं।" **(नज़्म–आयत–3–4)**

इसीलिए आप सल्ल. से मुहब्बत और आपके अहकाम की पैरवी ईमान का हिस्सा है। जैसा कि इर्शादे बारी है "अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करों, अल्लाह भी तुम्हें दोस्त रखेगा।" **(आले इमरान – 31)** यह सच है कि अल्लाह ने बहुत सी चीज़ों की मुहब्बत इन्सान के दिल में डाली है। अगर मख़लूक़ के दिल में अल्लाह मुहब्बत न डालता तो कोई बच्चा परवान न चढ़ता। मां की ममता, बाप की शफ़क्क़त, भाई–बहन का प्यार व मियां बीवी की मुहब्बत अल्लाह ही की तो तरफ़ से है।

हुब्बे रसूल सल्ल. के इज़हार में एतेदाल:–

कुछ लोग रसूल सल्ल. की मुहब्बत के इज़हार में और आप सल्ल. की ख़ूबियां बयान करने में इतना आगे बढ़ जाते हैं कि अल्लाह की सिफ़ात भी आप सल्ल. के साथ जोड़ देते हैं। अल्लाह ने इसी को गुलू कहा और फ़रमाया "दीन में गुलू न करों।" **(निसा–171 & माइदा – 77)** अल्लाह के रसूल सल्ल. की बअसत का मक़सद तो यह था कि लोगों को शिर्क व कुफ़्र के अन्धेरों से निकाल कर तौहीद की तरफ़ बुलाया जाए। ग़ैरूल्लाह की बन्दगी से हटा कर अल्लाह अकेले की बन्दंगी पर लगाया जाए। मगर खुद उम्मते मुस्लिमा के कई लोग शैतान के बहकावे में आकर शिर्क को तौहीद और अहले तौहीद को गुस्ताखे रसूल समझ बैठे हैं। खुदाई सिफ़ात रसूल सल्ल. व औलिया अल्लाह में मानने को तौहीद समझते हैं। अल्लाह की और उसके रसूल सल्ल. की पैरवी करने वालों को बुरे नाम देते हैं। हालांकि आप सल्ल. ने मदीना की कुछ बच्चियों को जब यह शैर कहते सुना "हम में एक ऐसा नबी है जो कल होने वाली बात जानता है।" तो आप सल्ल. ने फ़रमाया" ऐसा मत कहो, जो कुछ कल होगा, उसको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।" **(इब्ने माज़ा – 1897)**

पुकार सिर्फ़ अल्लाह के लिए :– तौहीद तो यह है कि दुख दर्द व मुसीबत में दुआएं सुनने, और कुबूल करने वाला सिर्फ़ अल्लाह को माना जाए। इसलिए कि इर्शादे बारी है "जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में सवाल करें तो (कह दो कि) मैं तुम्हारे पास हूँ। जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ कुबूल करता हूँ। तो उन्हें चाहिये कि मेरे अहकाम को माने और मुझ पर ईमान लाएं ताकि सीधी राह पाएं।" **(बक़रह – 186)** और यह कि "कह दो–मैं तो अपने रब को पुकारता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं बनाता। यह भी कहदो कि मैं तुम्हारे हक़ में नुक़्सान व नफ़े का कुछ इख़्तियार नहीं रखता। मुझे भी अल्लाह के सिवा कहीं किसी का भी सहारा नहीं मिल सकता और अल्लाह के सिवा कहीं भी पनाह की जगह मैं खुद भी नहीं पा सकता।" **(जिन्न–आयत–20 से 22)** यह भी कि "लोगों! अपने रब से आजिज़ी से और चुपके – चुपके दुआएं मांगा करों।" **(आराफ़ – 55)** मालूम हुआ कि

1. पुकार सिर्फ़ अल्लाह के लिए है।
2. मख़लूक़ की हर तक़लीफ़ व ज़रूरत का इल्म उसी को है।
3. मख़लूक़ पर सबसे ज़्यादा मेहरबान भी वही है।
4. मख़लूक़ की मुसीबत व परेशानी दूर करने वाला भी वही है। फिर उस जानने वाले, रहम करने वाले और हर बात पर कुदरत रखने वाले अल्लाह को छोड़ कर किसी और को मदद के लिए क्यों पुकारा जाए?

इसीलिए फ़रमाया "मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से है।" **(अनफ़ाल–10)** और "जिनको तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, वह तुम्हारी मदद की ताक़त नहीं रखते बल्कि वह तो अपनी मदद भी नहीं कर सकते।" **(आराफ़–197)** (मुश्रिकीन) "जब कश्ती में सवार होते हैं तो मदद के लिए सिर्फ़ अल्लाह ही को पुकारते हैं और जैसे ही अल्लाह उन्हें समुद्र के तूफ़ान से बचा कर ज़मीन तक पहुंचाता है तो फ़ौरन शिर्फ करने लगते हैं।" **(अन्कबूत – 65)**

अम्बिया अलैहि. की दुआएं:–

1. आदम अलैहि. – "ऐ हमारे रब! हमने अपने आप पर जुल्म किया है अगर तूने हमें माफ़ नहीं किया और हम पर रहम नहीं फ़रमाया तो हम नुक्सान उठाने वालों में हो जाएंगे।" **(आराफ़ –आयत 23)**
2. नूह अलैहि. – "ऐ मेरे रब! इन्होंने मुझे झुटलाया, पस मेरी मदद कर।" **(मुअमिनून–39)**
3. अय्युब अलैहि. – "मुझे बीमारी ने घेर लिया है और तू ही सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।" **(अम्बिया –83)**
4. युनूस अलैहि. – "(ऐ अल्लाह!) तेरे सिवाए कोई मअबूद नहीं। तू पाक है, बेशक मैं ही कुसूर वार हूँ।" **(अम्बिया–87)**
5. ज़करिया अलैहि. – "ऐ मेरे रब! मुझे अपनी जानिब से पाकीज़ा औलाद अता कर।" **(आले इमरान – 38)**
6. मूसा अलैहि. – "ऐ मेरे रब! मुझ से कुसूर हुआ कि मैंने अपनी जान पर ज़्यादती की, मुझे माफ़ फ़रमा।" **(क़सस–16)**

7. मुहम्मद सल्ल. की दुआ – "ऐ मेरे रब! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर।" **(ताहा–आयत–114)**

औलिया अल्लाह की दुआएं:–

1. असहाबे कहफ़ की दुआ "ऐ हमारे रब! हम पर अपने पास से रहमत नाज़िल कर और हमारे काम को दुरूस्त कर दे।" **(कहफ़ –10)**

2. आराफ़ वालों की दुआ "ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम क़ौम के साथ शामिल न करना।" **(आराफ़ – 47)**

इर्शादे बारी है "यही वो लोग हैं, जिनको अल्लाह ने हिदायत की। पस उनकी सीरत की पैरवी करों" **(अनआम–91)** हमने जाना कि अम्बिया अलैहि. ने और औलिया रह. ने जब भी दुआ की, अल्लाह ही से की। अगर हम वाक़ई इन बुजुर्ग हस्तियों से मुहब्बत करते हैं तो उन्हीं की पैरवी करें। जब भी पुकारें, अल्लाह ही को पुकारें, उसी से मदद मांगें। उसी को हाजत रवा व मुश्किल कुशा जानें और यही अल्लाह का हुक्म भी है।

पुकारना इबादत है:– अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया "बेषक! दुआ ही इबादत है।" **(तिर्मिज़ी – 3126 & अहमद –)** बल्कि "दुआ ही इबादत की रूह व जान है।" **(तिर्मिज़ी – 3125)** पुकारना इबादत है और इबादत सिर्फ़ अल्लाह ही की की जानी चाहिये। अगर किसी दूसरे को पुकारा गया तो यह उसकी इबादत कहलाएगी, जो कि शिर्क है और शिर्क ना क़ाबिले माफ़ी गुनाह है। इर्शादे बारी है "जब शिर्क करने वाले अपने बनाए हुए शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे ऐ हमारे रब! यही हमारे वोह शरीक हैं जिनको हम तेरे अलावा पुकारते थे।" **(नहल–आयत–86)** इस आयत से भी मालूम हुआ कि अल्लाह के अलावा किसी दूसरे को पुकारना शिर्क है।

ग़ैरूल्लाह को पुकारना कुफ़ है:–

इर्शादे बारी है "जो अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद को पुकारता है। उसके पास इसकी कोई दलील नहीं। उसका हिसाब अल्लाह के ज़िम्मे हैं, बेशक! काफ़िर कामयाब नहीं होंगें।" **(मुअमिनून–117)**

अल्लाह के अलावा किसी दूसरे को मदद के लिए पुकारने वाले मरते वक़्त खुद अपने काफ़िर होने का इक़रार करेंगे। जैसा कि इर्शादे बारी है "यहां तक कि उनके पास हमारे फ़रिश्ते जब (उन की) जान लेने को आएंगे तो वोह (फ़रिश्ते) पूछेंगें वह कहां हैं? जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे। वोह जवाब देंगें आज हमसे गुम हो गए और इक़रार करेंगें कि बेशक उन्होंने कुफ़्र किया।" **(आराफ़ – 37)**

गैरूल्लाह को पुकारना अज़ाब का सबब है:–

इर्शादे बारी है "अल्लाह के साथ किसी और मअबूद को न पुकारो। वरना तुम अज़ाब पाने वालों में से हो जाओगें।" **(शोअरा–213)** "और जहन्नम गुमराहों के सामने कर दी जाएगी और कहा जाएगा। वोह कहां गए? जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे। क्या वोह तुम्हारी मदद कर सकते हैं? या अपना ही बचाव कर सकते हैं? पस वोह मअबूद और गुमराह (उन्हें पूजने वाले) दोज़ख़ में औधें मुंह डाल दिये जाएंगें।" **(शोअरा–आयत–91 से 94)** यहां यह वज़ाहत भी ज़रूरी है कि जो मुश्रिकीन अम्बिया अलैहि. व

औलिया रह. को (मदद के लिए) पुकारते हैं। मगर चूंकि अम्बिया व औलिया शिर्क व मुश्रिकीन के दुश्मन थे, इसलिए वो उनके मअबूद नहीं। उनका मअबूद शैतान हैं। जैसा कि **(निसा–117 और माइदा–116)** में है। और यह कि "अल्लाह के सिवा किसी से दुआ भी न करना जो तुझे कभी न नफ़ा पहुंचा सके और न तेरा नुक़्सान कर सकता हो। अगर तूने ऐसा किया तो तू भी ज़ालिमों (शिर्क करने वालों) में से ही जाएगा।" **(युनुस–आयत–106)**

ग़ैरूल्लाह को पुकारना शैतान की इबादत हैः–

क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमाएगा– "ऐ औलादे आदम! क्या मैंने तुम से कह नहीं दिया था कि शैतान की इबादत न करना। यक़ीनन वह तुम्हारा खुला दुश्मन है और मेरी ही इबादत करना, यही सीधी राह है।" **(यासीन–आयत –60, 61)**

चूंकि अल्लाह के सिवा किसी को भी पुकारा जाए, वह शैतान ही की इताअत है और यह इताअत ही उसकी इबादत हैं। इर्शादे बारी है–

"जब इब्राहीम (अलैहि.) ने अपने बाप से कहा–अब्बा जान! आप उसकी इबादत क्यों करते हो? जो न सुनता है, न देखता हैं और न कोई फ़ायदा दे सकता है। अब्बा जान। मेरे पास वह इल्म आ गया है जो आपके पास नहीं है। मेरा कहा मानिये, मैं आपको सीधी राह पर ले चलूंगा। आप शैतान की इबादत न करें, शैतान तो रहमान (अल्लाह) का दुश्मन है।" **(मरयम– आयत – 42 से 44)** "और जिस दिन वह (अल्लाह) उन सब को जमा करेगा। फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा–क्या यह लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे? फ़रिश्ते कहेंगें आप (हर ऐब से) पाक हैं। उनके बजाए आप ही हमारे दोस्त हैं बल्कि यह लोग जिन्नात की इबादत करते थे। इनकी अक्सरियत उन्हीं पर ईमान लाती थी।" **(सबा–आयत–40–41)** याद रहे कि "इब्लीस जिन्नात में से था।" **(क़हफ़ – 50)**

ग़ैरूल्लाह को पुकारना बे फ़ायदा हैः–

इर्शादे बारी है "(अल्लाह) को पुकारना फ़ायदेमन्द है और जो उसके सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन्हें कोई जवाब नहीं दे सकते। इसकी मिसाल पानी की तरफ़ हाथ फैलाने वाले की तरह है (जो चाहता है कि) पानी उसके मुंह में आ जाए। हालांकि वह आ नहीं सकता काफ़िरों की पुकार बेकार है।" **(रअद–14)** "और जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की गुठली के छिलके पर जो बारीक झिल्ली होती है, उसके भी मालिक नहीं हैं। अगर तुम उन्हें पुकारों तो वह तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगें और न ही तुम्हारी हाजत पूरी कर सकते हैं बल्कि कयामत के दिन वोह तुम्हारे शिर्क का इन्कार कर देंगें।" **(फ़ातिर–13–14)** और यह कि "उस शख़्स से बढ़ कर कौन गुमराह हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उन को पुकारता है जो क़यामत तक उसको जवाब नहीं दे सकते बल्कि उसकी पुकार ही से ग़ाफ़िल हैं। जब लोग जमा किये जाएंगें तो वोह (मअबूद) उसके दुश्मन हो जाएंगें और उसकी इबादत का इनकार कर देंगें।" **(अहक़ाफ़–5–6)**

इश्क़े रसूल सल्ल. का दम भरने वालों के अक़्वालः– 'ग़ैरूल्लाह की पुकार' के खिलाफ़ इतनी साफ़ आयात होने के बावजूद कुछ उलैमा का यह कहना कि –

1. औलिया से मदद मांगना, उन्हें पुकारना और उनका वसीला पकड़ना शरअन जाइज़ है। **(फ़तावा रिज़विया–सफ़ा–300)**

2. अम्बिया, औलिया, सालिहीन से उनके फौत होने के बाद भी मदद मागंना जाइज़ है वह हालात बदलने की ताक़त रखते हैं। **(अल अमन वल अला सफ़ा–10)**

3. मैंने जब भी मदद मांगी या ग़ौस ही कहा। **(मलफूजात अ. रजा,. सफा – 307)**

4. जब तुम्हें परेशानी का सामना हो तो क़ब्र वालों से मदद मांगों। **(अल अमन वल अला–सफ़ा – 46)** शिर्क नहीं तो फिर क्या है? इसलिए कि वह दीन जो सहाबा किराम रज़ि. ने अल्लाह के रसूल सल्ल. से सीखा उसमें यह नज़रियात, अक़ाइद व तालीमात नहीं हैं। न अइम्मा अर्बआ में से किसी ने इस तरह की तालीम दी है। रास्ता वहीं हक़ है जो आप सल्ल. ने बताया – दिखाया और सहाबा रज़ि. ने सीखा और उस पर चले।

इर्शादे बारी है "जिसने रसूल की इताअत की, उसने अल्लाह ही की इताअत की।" **(निसा–80)** "और जो शख़्स सीधा रास्ता मालूम होने के बाद रसूल (सल्ल.) की मुख़ालिफ़त करे और मोमिनों के रास्ते को छोड़ कर दूसरे रास्ते पर चले तो जिधर वह चलता है, हम उसे उधर ही चलने देंगें और क़यामत के दिन जहन्नम में दाख़िल करेंगें, वह बुरी जगह हैं।" **(निसा–115)**

ज़रा सोचिए कि आपकी दुनियावी व उख़र वी भलाई किस में है? अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. की तालीमात पर अमल करने में या इनकी मुख़ालिफ़त कर अपनी या किसी दूसरे की ख़्वाहिशात पर चलने में। इर्शादे बारी है" "(ऐ नबी सल्ल.) तुम उन्हें (अपनी बात) नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं।" **(फ़ातिर – 22)** "यह मुर्दा हैं, ज़िन्दा नहीं हैं। इन्हें तो यह भी पता नहीं कि (क़ब्र से) उठाये कब जाएंगे?" **(नहल –21)**

जिन क़ब्र वालों को आप सल्ल. भी बात नहीं सुना सकते थे और जिन्हें यह तक ख़बर नहीं कि उन्हें उठाया कब जाएगा? क्या अपनी बात उन्हें सुनाने की हम ताक़त रखते हैं? जो मुर्दा हैं, व ना हमारी परेषानी सुनता है और न जानता है। जो अपनी क़ब्र से मक्खी नहीं उड़ा सकता। क्या वह हमारी या किसी की मदद करने की ताक़त रखता हैं?

फैसला आप खुद कीजिए कि सही क्या है? निजात की राह वह है जो अल्लाह ने और उसके रसूल सल्ल. ने बतलाई या वह जिसे हमने या हमारे किसी बड़े ने पसन्द किया? हमारी तो अल्लाह से दुआ है कि वह हम सभी को शिर्क से बचाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए ताकि हम जहन्नम के अज़ाब से बच सके। आमीन!

आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639
09887239649